myresearchgo Volume 1, August Issue 5, 2025, ISSN: 3107-3816 (Online)

स्नातक छात्रों के बीच भारतीय पारंपरिक खेलों के प्रति जागरूकता और दृष्टिकोण पर डिजिटल मीडिया के प्रभाव

डॉ. अखिलेश कुमार सिंह (सह–आचार्य) (शारीरिक शिक्षा विभाग) श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय पीलीबंगा (हनुमानगढ़) राजस्थान)

पंकज कोहली

शोधकर्ता (श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय पीलीबंगा (हनुमानगढ़) राजस्थान)

सार

यह अध्ययन स्नातक छात्रों के बीच भारतीय पारंपरिक खेलों के प्रति जागरूकता और दृष्टिकोण पर डिजिटल मीडिया के प्रभाव का विश्लेषण करता है। बदलती जीवनशैली और तकनीकी प्रगति के इस युग में डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसे सोशल मीडिया, यूट्यूब, ओटीटी सेवाएं और समाचार वेबसाइटें भारतीय सांस्कृतिक विरासत, विशेषकर पारंपरिक खेलों, के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इस शोध के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि डिजिटल मीडिया भारतीय पारंपरिक खेलों के प्रति छात्रों की जानकारी, रुचि और दृष्टिकोण को कैसे प्रभावित कर रहा है। सर्वेक्षण विधि का उपयोग करते हुए छात्रों के अनुभव, दृष्टिकोण और व्यवहार संबंधी बदलावों का अध्ययन किया गया। शोध के निष्कर्ष भारतीय सांस्कृतिक संरक्षण, खेल नीति निर्माण और युवा सशक्तिकरण के प्रयासों के लिए महत्वपूर्ण सुझाव प्रदान करते हैं।

मुख्य शब्द: भारतीय पारंपरिक खेल, डिजिटल मीडिया, स्नातक छात्र, जागरूकता, दृष्टिकोण,
सांस्कृतिक विरासत, सोशल मीडिया प्रभाव

परिचय

भारत, विविधताओं का देश, अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और परंपराओं के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। इस सांस्कृतिक समृद्धि में भारतीय पारंपरिक खेलों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। कबड्डी, खो–खो, मलखंभ, गिल्ली–डंडा, कुश्ती, सात पत्थर, जैसे खेल सदियों से भारतीय जनजीवन का अभिन्न अंग रहे हैं। ये खेल न केवल मनोरंजन के साधन रहे हैं, बल्कि सामाजिक एकता, शारीरिक विकास और मानसिक दक्षता के संवर्धन में भी इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

हालांकि, बदलते समय के साथ, वैश्वीकरण, शहरीकरण और पश्चिमी प्रभाव के चलते भारतीय पारंपरिक खेलों की लोकप्रियता में उल्लेखनीय गिरावट देखी गई है। आधुनिक खेल जैसे क्रिकेट, फुटबॉल, बास्केटबॉल, और वर्चुअल गेमिंग के बढ़ते प्रचलन ने पारंपरिक खेलों को धीरे–धीरे युवा पीढ़ी की प्राथमिकता से बाहर कर दिया है। विशेष रूप से स्नातक छात्रों के बीच, जो तकनीकी रूप से अधिक जागरूक और डिजिटल रूप से जुड़े हुए हैं, भारतीय पारंपरिक खेलों के प्रति रुचि में स्पष्ट कमी देखी जा सकती है।

myresearchgo Volume 1, August Issue 5, 2025, ISSN: 3107-3816 (Online)

वर्तमान युग को यदि 'डिजिटल युग' कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इंटरनेट, सोशल मीडिया, ऑनलाइन गेमिंग, और डिजिटल मनोरंजन के अन्य माध्यमों ने युवाओं के जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया है। इस परिप्रेक्ष्य में, डिजिटल मीडिया एक ऐसा सशक्त माध्यम बनकर उभरा है, जो न केवल जानकारी के प्रसार में सहायक है, बल्कि विचारों, दृष्टिकोणों और व्यवहारों को आकार देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

यही डिजिटल मीडिया भारतीय पारंपरिक खेलों के पुनर्जीवन और जागरूकता के लिए एक अवसर भी प्रदान करता है। विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स, यूट्यूब चौनल्स, वेब सीरीज, डिजिटल डॉक्यूमेंट्रीज और ऑनलाइन प्रतियोगिताओं के माध्यम से पारंपरिक खेलों का प्रचार–प्रसार संभव हो रहा है। इस परिप्रेक्ष्य में, स्नातक छात्रों का दृष्टिकोण और जागरूकता स्तर इस बात के संकेतक बन सकते हैं कि डिजिटल मीडिया किस हद तक पारंपरिक खेलों की ओर रुचि पुनर्स्थापित करने में सफल रहा है।

भारत जैसे देश में, जहाँ युवा आबादी विश्व की सबसे बड़ी युवा जनसंख्या में से एक है, युवाओं का दृष्टिकोण सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन में अत्यंत निर्णायक भूमिका निभाता है। यदि युवा वर्ग, विशेषकर उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र, भारतीय पारंपरिक खेलों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाते हैं, तो इससे न केवल सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण होगा, बल्कि पारंपरिक खेलों के पेशेवर विकास, व्यावसायीकरण और वैश्विक स्तर पर पहचान बनाने की संभावनाएँ भी सृजित होंगी।

भारतीय पारंपरिक खेलों के प्रति जागरूकता पर डिजिटल मीडिया का प्रभाव

भारतीय पारंपरिक खेलों का हमारे देश की सांस्कृतिक धरोहर में महत्वपूर्ण स्थान है। समय के साथ इन खेलों को अन्य खेलों के मुकाबले कम महत्व मिलने लगा था, लेकिन डिजिटल मीडिया के आगमन से इन खेलों के प्रति जागरूकता और रुचि में पुनः वृद्धि हुई है। यहां हम देख सकते हैं कि डिजिटल मीडिया ने इन खेलों को फिर से जीवित किया है और इन्हें एक नया मंच दिया है।

1. सूचना का प्रसार

डिजिटल मीडिया, विशेषकर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब और ट्विटर ने भारतीय पारंपरिक खेलों के बारे में जानकारी का प्रसार तेजी से किया है। वीडियो, ब्लॉग, और पोस्ट के माध्यम से लोग इन खेलों की तकनीक, इतिहास और उनके लाभों के बारे में जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, कबड्डी, कुश्ती, खो–खो और गिली–डंडा जैसे खेलों के बारे में आजकल डिजिटल प्लेटफार्मों पर बहुत कुछ देखा जा सकता है, जो पहले केवल स्थानीय स्तर पर ही सीमित थे।

2. नए रूप में प्रस्तुतिकरण

myresearchgo Volume 1, August Issue 5, 2025, ISSN: 3107-3816 (Online)

डिजिटल मीडिया ने पारंपरिक खेलों को नए रूप में प्रस्तुत किया है। यूट्यूब और इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफार्मों पर वीडियो और ट्यूटोरियल की मदद से इन खेलों को युवाओं के बीच आकर्षक तरीके से पेश किया जाता है। खेलों के बारे में मिम्स, चौलेंजेस और एंटरटेनिंग वीडियो से इन खेलों को एक मजेदार और आधुनिक अंदाज में प्रस्तुत किया जा रहा है।

3. सामाजिक साक्षात्कार और जागरूकता

सोशल मीडिया पर भारतीय पारंपरिक खेलों के समर्थकों और विशेषज्ञों की आवाजें तेजी से फैल रही हैं। विभिन्न सोशल मीडिया अकाउंट्स और पेजमे, जैसे "खो–खो इंडिया" या "कबड्डी फॉर लाइफ" आदि, इन खेलों के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इन प्लेटफार्म्स पर खेलों से जुड़ी चुनौतियों, टूर्नामेंट्स, और संबंधित आयोजनों की जानकारी भी साझा की जाती है। इसके परिणामस्वरूप, पारंपरिक खेलों के प्रति नई पीढ़ी में रुचि बढ़ रही है।

4. व्यावासिक और सांस्कृतिक समर्थन

डिजिटल मीडिया ने इन खेलों को व्यवसायिक दृष्टिकोण से भी एक नया अवसर प्रदान किया है। कबड्डी जैसे खेलों ने प्रो कबड्डी लीग जैसी बड़ी प्रतियोगिताओं के माध्यम से एक नया व्यवसायिक मॉडल स्थापित किया है। इस प्रकार की लीग और प्रतियोगिताएं डिजिटल माध्यम से बड़ी संख्या में दर्शकों तक पहुँच रही हैं, जिससे पारंपरिक खेलों का विकास हो रहा है।

5. युवाओं के बीच बढ़ती रुचि

डिजिटल मीडिया ने भारतीय युवाओं के बीच पारंपरिक खेलों के प्रति बढ़ती रुचि को देखा है। इंस्टाग्राम पर पोस्ट और रील्स, यूट्यूब चौनल्स, और अन्य डिजिटल मंचों के माध्यम से युवा पीढ़ी को अपने पारंपरिक खेलों से जुड़ने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। इस तरह से पारंपरिक खेल अब आधुनिक तकनीकी माध्यमों के साथ जुड़कर अधिक आकर्षक हो गए हैं।

6. सांस्कृतिक पहचान का पुनर्निर्माण

पारंपरिक खेल भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा हैं और डिजिटल मीडिया ने इन खेलों को सांस्कृतिक पहचान और गौरव की ओर पुनः प्रेरित किया है। इन खेलों को बढ़ावा देने के लिए डिजिटल मीडिया पर कार्यक्रम, चौलेंज और डाक्यूमेंट्री बन रही हैं, जो भारतीय संस्कृति को प्रमोट करती हैं और इन खेलों के महत्व को उजागर करती हैं।

डिजिटल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव

सांस्कृतिक धरोहर को बढ़ावा: पारंपरिक खेलों को डिजिटल मीडिया के माध्यम से प्रमोट करने से छात्रों में अपनी सांस्कृतिक धरोहर और भारतीय खेलों के प्रति गर्व की भावना पैदा होती है। इन खेलों के प्रति बढ़ती जागरूकता युवा पीढ़ी को अपनी परंपराओं और संस्कृति से जोड़ने में मदद करती है।

myresearchgo Volume 1, August Issue 5, 2025, ISSN: 3107-3816 (Online)

स्वास्थ्य और शारीरिक फिटनेस: डिजिटल मीडिया ने शारीरिक स्वास्थ्य के महत्व को भी उजागर किया है। पारंपरिक खेल, जो शारीरिक कौशल और फिटनेस को बढ़ावा देते हैं, अब छात्रों के बीच एक लोकप्रिय विकल्प बन चुके हैं। इन खेलों के माध्यम से छात्र न केवल शारीरिक रूप से मजबूत होते हैं, बल्कि मानसिक रूप से भी सशक्त बनते हैं।

कला और कौशल का संरक्षण: पारंपरिक खेलों के प्रचार से न केवल खेलों का ही संरक्षण होता है, बल्कि उनकी कला और कौशल भी संरक्षित रहते हैं। उदाहरण के लिए, मलखंभ और कंबल युद्ध जैसी प्राचीन खेल विधाओं को अब डिजिटल प्लेटफार्मों पर देखा जा सकता है, जिससे इनका अध्ययन और अभ्यास करना आसान हो गया है।

डिजिटल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव

आधुनिक खेलों का प्रभाव: डिजिटल मीडिया के कारण पश्चिमी और आधुनिक खेल जैसे क्रिकेट, फुटबॉल, और टेनिस का प्रभाव बढ़ गया है। इन खेलों के मुकाबले पारंपरिक खेलों की दृश्यता और लोकप्रियता कम हो सकती है। छात्रों का ध्यान अक्सर इन खेलों की ओर आकर्षित होता है, जिससे पारंपरिक खेलों की ओर कम रुचि बनी रहती है।

सूचना का प्रदूषण: इंटरनेट पर उपलब्ध अत्यधिक जानकारी कभी–कभी भ्रमित करने वाली हो सकती है। पारंपरिक खेलों के बारे में सही और सटीक जानकारी प्राप्त करना कठिन हो सकता है, क्योंकि इन खेलों के बारे में कई बार विकृत जानकारी भी मिलती है, जिससे छात्रों के दृष्टिकोण पर नकारात्मक असर पड़ सकता है।

सामाजिक दबाव और प्रतिस्पर्धा: डिजिटल मीडिया में अक्सर यह दिखाया जाता है कि छात्रों को आधुनिक खेलों में सफलता प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए। इस तरह के दबाव के कारण पारंपरिक खेलों को तुच्छ या कमतर समझा जा सकता है।

अध्ययन का महत्व

भारतीय पारंपरिक खेलों के प्रति जागरूकता और दृष्टिकोण पर डिजिटल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन महत्वपूर्ण है क्योंकि यह कई पहलुओं पर प्रकाश डालता है, जो समाज और संस्कृति को प्रभावित करते हैं। निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से इस अध्ययन के महत्व को समझा जा सकता है:

1. भारतीय पारंपरिक खेल हमारे देश की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा हैं। इन खेलों के प्रति जागरूकता और रुचि बढ़ाने से युवा पीढ़ी में अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ाव होता है। डिजिटल मीडिया के माध्यम से इन खेलों को पुनः प्रचलित करना, उन्हें बचाने और बढ़ावा देने का एक प्रभावी तरीका बन सकता है।
2. पारंपरिक खेलों का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इनमें संयम, सहनशक्ति, टीमवर्क, और रणनीति जैसी महत्वपूर्ण जीवन कौशलों का विकास होता है। स्नातक छात्रों के बीच इन खेलों के प्रति जागरूकता से उनके मानसिक विकास और शारीरिक फिटनेस में सुधार हो सकता है।

3. वर्तमान डिजिटल युग में, इंटरनेट और सोशल मीडिया का प्रभाव युवाओं पर गहरा पड़ता है। यह अध्ययन यह समझने में मदद करेगा कि डिजिटल मीडिया कैसे भारतीय पारंपरिक खेलों को बढ़ावा देने और उनके प्रति छात्र–समाज की रुचि को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
4. पारंपरिक खेलों में समुदाय का एक अहम हिस्सा होता है। इन खेलों के प्रति जागरूकता बढ़ाने से स्नातक छात्रों में सामाजिक और सांस्कृतिक एकता का संचार हो सकता है। यह समाज में सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में एक कदम हो सकता है।
5. पारंपरिक खेलों और आधुनिक खेलों के बीच अंतर को समझने से छात्रों को दोनों प्रकार के खेलों का महत्व समझ में आता है। पारंपरिक खेलों को डिजिटल मीडिया के माध्यम से बढ़ावा देना, उनके साथ संतुलन बनाए रखने की दिशा में सहायक हो सकता है, जिससे कि दोनों का समग्र विकास हो सके।
6. भारतीय पारंपरिक खेलों को डिजिटल प्लेटफार्मों पर बढ़ावा देने से नए व्यवसायिक और विपणन अवसर उत्पन्न हो सकते हैं। इससे इन खेलों को एक उद्योग के रूप में स्थापित किया जा सकता है, जिससे युवाओं के लिए रोजगार के अवसर सृजित हो सकते हैं।
7. इस अध्ययन के माध्यम से पारंपरिक खेलों को शिक्षा नीति और शारीरिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए सुझाव दिए जा सकते हैं। इससे छात्रों के समग्र विकास में मदद मिलेगी और खेलों के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी।

अध्ययन का उद्देश्य

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य स्नातक छात्रों के बीच भारतीय पारंपरिक खेलों के प्रति जागरूकता और दृष्टिकोण को डिजिटल मीडिया द्वारा प्रभावित करने वाले पहलुओं की पहचान करना है। साथ ही, यह जानना है कि डिजिटल प्लेटफार्मों पर भारतीय पारंपरिक खेलों के प्रचार से छात्रों की मानसिकता और उनके खेलों के प्रति दृष्टिकोण में कैसे बदलाव आया है।

शोध पद्धति

यह अध्ययन एक वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक शोध डिजाइन पर आधारित है। इसका उद्देश्य यह समझना है कि डिजिटल मीडिया किस प्रकार स्नातक छात्रों के बीच भारतीय पारंपरिक खेलों के प्रति जागरूकता और दृष्टिकोण को प्रभावित कर रहा है। अध्ययन में 500 स्नातक छात्रों को शामिल किया गया। सुविधाजनक नमूना चयन विधि का प्रयोग किया जाएगा, जिसमें उपलब्ध और इच्छुक छात्रों से डाटा एकत्रित किया जाएगा। इस अध्ययन के लिए एक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। सर्वेक्षण में कुल 500 स्नातक छात्रों को शामिल किया गया, जो विश्वविद्यालयों और कॉलेजों से थे। सर्वेक्षण प्रश्नावली में छात्रों से डिजिटल मीडिया के माध्यम से भारतीय पारंपरिक खेलों के बारे में उनकी जागरूकता, रुचि और दृष्टिकोण पर सवाल पूछे गए थे। डेटा को सांख्यिकीय रूप से विश्लेषित किया गया।

परिणाम

myresearchgo Volume 1, August Issue 5, 2025, ISSN: 3107-3816 (Online)

तालिका 1: भारतीय पारंपरिक खेलों के प्रति जागरूकता

खेल का नाम	छात्रों की जागरूकता (%)
कबड्डी	85%
कुश्ती	78%
गिली डंडा	65%
कंचे	72%
फुटबॉल	90%

सर्वेक्षण के परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय पारंपरिक खेलों के प्रति जागरूकता का स्तर विभिन्न खेलों में भिन्न है। जैसे कि कबड्डी और कुश्ती के बारे में जागरूकता अधिक है, जबकि गिली डंडा और कंचे जैसे खेलों के प्रति जागरूकता कम है। डिजिटल मीडिया के प्रभाव से इन खेलों के प्रचार में वृद्धि हो रही है, लेकिन अभी भी कुछ खेलों की पहचान और पहुंच में कमी है।

तालिका 2: डिजिटल मीडिया के माध्यम से खेलों के प्रति दृष्टिकोण

प्लेटफॉर्म	सकारात्मक दृष्टिकोण (%)	नकारात्मक दृष्टिकोण (%)
सोशल मीडिया	65%	25%
यूट्यूब	70%	20%
न्यूज वेबसाइट्स	55%	30%
डिजिटल विज्ञापन	60%	25%

तालिका 2 के अनुसार, सोशल मीडिया और यूट्यूब जैसे डिजिटल प्लेटफार्मों पर भारतीय पारंपरिक खेलों के प्रचार ने छात्रों के बीच सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न किया है। जहां एक ओर सोशल मीडिया और यूट्यूब पर खेलों को प्रमोट किया जा रहा है, वहीं दूसरी ओर कुछ प्लेटफार्मों पर पारंपरिक खेलों की तुलना पश्चिमी खेलों से की जा रही है, जिसके कारण कुछ नकारात्मक दृष्टिकोण भी उत्पन्न हो रहे हैं। डिजिटल विज्ञापनों और न्यूज वेबसाइट्स पर पारंपरिक खेलों के प्रचार का असर कम दिखाई दे रहा है।

तालिका 3: भारतीय पारंपरिक खेलों के प्रति छात्रों की रुचि

खेल का नाम	छात्रों की रुचि (%)

myresearchgo Volume 1, August Issue 5, 2025, ISSN: 3107-3816 (Online)

कबड्डी	75%
कुश्ती	65%
गिली डंडा	55%
कंचे	40%
पोलो	45%

तालिका 3 के अनुसार, पारंपरिक खेलों के प्रति छात्रों की रुचि में कबड्डी और कुश्ती सबसे अग्रणी हैं, जबकि गिली डंडा और कंचे जैसे खेलों के प्रति रुचि अपेक्षाकृत कम है। डिजिटल मीडिया के प्रभाव से छात्रों के बीच इन खेलों के प्रति रुचि को बढ़ावा मिला है, लेकिन अब भी कुछ खेलों को मुख्यधारा में आने के लिए अधिक प्रयासों की आवश्यकता है।

तालिका 4: पारंपरिक खेलों पर डिजिटल मीडिया के प्रभाव

प्रभाव का प्रकार	सकारात्मक प्रभाव (%)	नकारात्मक प्रभाव (%)
खेलों की लोकप्रियता	68%	20%
खेलों के प्रचार में वृद्धि	60%	25%
खेलों का सांस्कृतिक महत्व	55%	30%

तालिका 4 से यह निष्कर्ष निकलता है कि डिजिटल मीडिया का प्रभाव भारतीय पारंपरिक खेलों की लोकप्रियता और प्रचार में सकारात्मक रूप से दिखाई दे रहा है। 68% छात्रों ने माना कि डिजिटल मीडिया के कारण इन खेलों की लोकप्रियता बढ़ी है, जबकि 30% छात्रों का मानना है कि खेलों का सांस्कृतिक महत्व अब भी कम है। यह दर्शाता है कि हालांकि प्रचार में वृद्धि हुई है, लेकिन पारंपरिक खेलों को पूरी तरह से लोकप्रिय बनाने के लिए और प्रयास करने की आवश्यकता है।

तालिका 5: भारतीय पारंपरिक खेलों के प्रति छात्रों का दृष्टिकोण

दृष्टिकोण	प्रतिशत (%)
सकारात्मक	55%
नकारात्मक	20%
निरपेक्ष	25%

myresearchgo Volume 1, August Issue 5, 2025, ISSN: 3107-3816 (Online)

तालिका 5 के परिणामों से यह पता चलता है कि कुल मिलाकर छात्रों का दृष्टिकोण भारतीय पारंपरिक खेलों के प्रति सकारात्मक है। 55% छात्रों का मानना है कि ये खेल न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि सांस्कृतिक धरोहर भी हैं। हालांकि, 20% छात्रों का दृष्टिकोण नकारात्मक है, जो यह मानते हैं कि इन खेलों की लोकप्रियता में कमी आई है और वे अब प्रासंगिक नहीं हैं। कुछ छात्रों ने इन खेलों को आधुनिक समय के अनुरूप विकसित करने की आवश्यकता पर जोर दिया है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल मीडिया भारतीय पारंपरिक खेलों के प्रति जागरूकता और दृष्टिकोण को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर रहा है। सोशल मीडिया, यूट्यूब और अन्य डिजिटल प्लेटफार्मों पर इन खेलों का प्रचार बढ़ा है, जिससे छात्रों के बीच इन खेलों के प्रति रुचि और सकारात्मक दृष्टिकोण में वृद्धि हुई है। हालांकि, कुछ खेलों की पहचान और पहुंच में अभी भी कमी है, और कुछ छात्रों का दृष्टिकोण नकारात्मक है। भारतीय पारंपरिक खेलों को पुनः जीवित करने और उन्हें आधुनिक समय के अनुरूप बनाने के लिए डिजिटल मीडिया का अधिक प्रभावी उपयोग आवश्यक है।

संदर्भ

1. शर्मा, अ. (2022) भारतीय पारंपरिक खेलों में डिजिटल मीडिया का योगदान. भारतीय खेल विज्ञान पत्रिका, 15(2), 45–52.
2. कुमारी, स. (2021) भारतीय पारंपरिक खेलों के प्रचार में सोशल मीडिया का प्रभाव. समाज विज्ञान और खेल अध्ययन, 9(1), 67–74.
3. चौधरी, र. (2020) डिजिटल मीडिया और भारतीय खेल संस्कृति. खेल और संस्कृति, 12(4), 98–105.
4. यादव, प. (2023) डिजिटल प्लेटफार्मों पर भारतीय खेलों का पुनरुद्धार. राष्ट्रीय खेल पत्रिका, 18(3), 34–40.
5. मिश्रा, ज. (2021) पारंपरिक खेलों के प्रचार में डिजिटल मीडिया की भूमिका. शिक्षा और खेल, 7(2), 112–119.
6. सिंह, म. (2022) भारतीय पारंपरिक खेलों के प्रति छात्रों की धारणा पर सोशल मीडिया का प्रभाव. समाजशास्त्र और खेल अध्ययन, 14(1), 22–30.
7. तिवारी, स. (2020) डिजिटल युग में भारतीय खेलों की जागरूकता. खेल और समाज, 10(3), 56–63.
8. ठाकुर, न. (2021) भारतीय पारंपरिक खेलों में डिजिटल मीडिया के प्रभाव का मूल्यांकन. खेल और संस्कृति पत्रिका, 5(2), 45–52.
9. अग्रवाल, य. (2023) भारतीय खेलों की नई पहचानरू सोशल मीडिया और पारंपरिक खेल. भारतीय खेल मीडिया, 11(4), 19–27.
10. शर्मा, क. (2022) डिजिटल माध्यमों द्वारा भारतीय खेलों के प्रचार का प्रभाव. खेल अध्ययन और शिक्षा, 8(3), 50–58.